शेख़ फ़रीद – सबद ५०
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥४६॥

सार: अहं अक्सर वस्तुओं के स्वामित्व के ज़रिए एक स्थायित्व का भ्रम पैदा करने की कोशिश करता है, यह मानते हुए कि यह सब उसकी पहचान को तय करने और उसे स्थिर रखने में मदद करेगा। यह सिर्फ़ चीज़ों को ही इकट्ठा और सुरक्षित नहीं रखता बल्कि पहचान, रुतबा और नियंत्रण को भी सहेज कर रखता है। जबकि, चीज़ें सिर्फ़ बाहरी दुनिया में ही जगह घेर सकती हैं, वह भीतर से सच्चा और संपूर्ण संतोष नहीं दे सकतीं। अहं जितना ज़्यादा भौतिक चीज़ों पर निर्भर रहता है, उसे उन्हें खोने का डर भी उतना ही ज़्यादा सताता है क्योंकि यह चीज़ें कभी भी उससे छीनी जा सकती हैं। इसी असुरक्षा के चलते, बाहरी तौर पर आराम और सफलता का दिखावा करने के बावजूद, भीतर ही भीतर बेचैनी और अशांति बनी रहती है। असल स्थायित्व चीज़ों में नहीं बल्कि भीतर विकसित की गई स्थिरता में है।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥
फ़रीद कहते हैं कि जिन्होंने महल, भवन और मंडप बनवाए, वह भी संसार से चले गए। यह दर्शाता है कि भौतिक निर्माण व संरचनाएँ अक्सर अपने निर्माताओं से अधिक समय तक टिकी रहती हैं और वह संपत्ति के माध्यम से अमर होने की अहं की कोशिश का उपहास करती हैं।

कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥४६॥
धोखे को अपना व्यापार बनाकर, वह नष्ट हो गए और क़ब्र में जा लेटे। यह व्यापार प्रतीक है, जीवन के अमूल्य अवसर को क्षणिक लाभों से बदलने का, जिसका अंतिम परिणाम केवल उतनी ही धरती मिलना होता है जो शरीर को ढकने के लिए पर्याप्त हो। (४६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद बताते हैं कि क्षणिक लाभों की अपनी खोज में, भीतरी अस्तित्व का सबसे मूल्यवान अंग अपनी अंतरात्मा की हम अक्सर बलि चढ़ा देते हैं। हम लाभ के लिए अपनी ईमानदारी, रुतबे के लिए अपनी संवेदनशीलता और सतही दिखावों के लिए अपनी आंतरिक गहराई का सौदा कर लेते हैं, यह मानकर कि यह सब चीजें हमें जीवन की स्वाभाविक नश्वरता से बचा लेंगी। फिर भी, अंत में, हमारे अथक प्रयासों का फल केवल धरती का एक छोटा सा टुकड़ा होता है जो हमारे अवशेषों को ढकने के काम आता है। उनकी यह अंतर्दृष्टियाँ धन या महत्वाकांक्षा का त्याग करने की सलाह नहीं देतीं बल्कि उस मूल्य को पहचानने का आग्रह करती हैं जो हम अंततः नश्वर वस्तुओं की खोज में स्वयं को खोकर चुकाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com